आधुनिक योग VS भोग

एस. पंडित

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © S. Pandit 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-389-8

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: December 2025

प्रस्तावना

क्या आपके मन में कभी यह विचार आया कि जिंदगी की यह भागदौड़ कब खत्म होगी? कोई भी इंसान रोजमर्रा की जिंदगी से और परेशानियों से जब थक जाता है, तो वह ये सोचता है कि आखिर किसलिए यह भागदौड़ है। लेकिन सच कहें, तो यह सृष्टि कर्म के पाश से बंधी है। यहाँ पर हर किसी को कर्म करना ही पड़ता है - खाना-पीना, सोना, उठना-बैठना, देखना, सोचना यह सब कर्म ही है। अगर कोई कुछ भी नहीं करता, तो वह भी एक कर्म ही है, ऐसा भगवान श्री कृष्ण ने भागवत गीता में कहा है और ऐसा सिर्फ इंसान के लिए ही नहीं बल्कि हर जीव के लिए है। प्राणी हो या पक्षी हो, कीड़ा या कोई भी जीव-जंतु हो, हर किसी को कर्म करना ही पड़ता है और इसके इसी परिणामस्वरूप उसे फल प्राप्त होता है। जब ऐसा है तो क्यों न हम युग निहाय कर्म करें! क्या है युग निहाय कर्म? घास को पता है कि उसे हिरण या गाय खाने ही वाला है, अगर नहीं भी खाया तो निर्धारित समय बाद वह सुखकर खत्म होने ही वाला है, पर फिर भी वह धूप और बारिश के तूफान का सामना करता है, वहीं डटा रहता है। ठीक ऐसा ही इस हिरण और अन्य प्राणियों के साथ भी होता है, पर वह अपने काम में दिन-रात लगे रहते हैं। किसी की इच्छा हो या न हो, सभी को निर्धारित कार्य करना ही पड़ता है और ये प्रकृति उनसे कार्य करवाती ही है। इसका उदाहरण है कि हिरण नहीं चाहता कि वह जी-जान लगाकर दौड़े,

पर अपनी जान बचाने के लिए उसे भागना ही पड़ता है। ठीक उसी तरह एक शेर भी नहीं दौड़ना चाहता है, पर दौड़ता है क्योंकि वह अगर ना दौड़ा, तो भूख से तड़पकर उसकी मौत पक्की है। यही चक्र सृष्टि के कण-कण में है।

अगर ऐसा है, तो क्यों न हम सही युग, सही काल और सही समय यह सब देखकर सही काम करें। क्या है 'युग अनुसार कर्म' इसकी विस्तृत चर्चा हम आगे करेंगे।

गीता में लिखा है –

य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारत: |

न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ||

जो विधिवत कार्य नहीं करता, वह कुछ भी प्राप्त नहीं करता; जो कार्य नहीं करता उसका विनाश अटल है और अपने आपको कायम रखने में जो हलचल करनी पड़ती है, उसे ही हम कार्य कह सकते हैं। अब इसमें भी कुछ जीव हैं, जो खुद के लिए कार्य करते हैं पर कुछ जीव ऐसे होते हैं, जो खुद के साथ-साथ औरों के बारे में भी सोचते हैं और सबका हित ध्यान में रखकर कार्य करते हैं, जैसे - शेर शिकार करता है पर वह ज्यादा शिकार करता है ताकि उसके बच्चे बिना भागदौड़ किए बैठकर आराम से खा सकें। ऐसा सभी जीवों में होता है। अपने साथ-साथ औरों के बारे में जो विचार करता है, वह दुनिया में महान कहलाता है। यह तो सभी जानते हैं यह पुस्तक अनेकों लोगों के हित में कार्य करने का एक विचार है।

हमें कर्म योग अपनाअपनाना है, पर वह कार्य करना है जो धर्म निहाय तो हो ही, पर युग निहाय भी होना चाहिए। धर्म निहाय कर्म ही धर्म की रक्षा करना है। जिन लोगों ने युग अनुसार कार्य किया, उनकी सफलता और कीर्ति गगन को छू रही है।

दुनिया में एसी अनेक चीजें हैं, जिनको जान-बूझकर जटिल बनाया गया है। पाश्चात्य लेखकों ने एक विचार लेकर उसी पर विचार मनन करके अपनी लेखन कला से पढ़ने वालों को अपने से सहमत करा लिया है परन्तु सनातन में, वेद और पुराण में ऐसा एक एक तत्व है, जो पूरे एक किताब के बराबर है। किसी भी चीज को पूरा करने की ठानें, किसी भी बुक को पढ़ने का मन हुआ, तो उसे पूरा पढ़ने का निश्चय करें और उस निश्चय को पूरा भी करें। फीजिकल बुक पढ़ें जिसमें डिस्ट्रक्शन नहीं होते। युग अनुसार कार्य करने का विचार पुस्तकों की दुनीय में एक क्रांति है। इसको पढ़ने के बाद दुनिया में कर्मयोगियों का शीतल प्रवाह आएगा। युग अनुसार कार्य करना यानी प्रकृति के साथ-साथ चलना और वक्त के हिसाब से कार्य करना, मनचाहा परिणाम या फल को देखकर कार्य करना, यह विचार अनेक पुस्तकों में अस्पष्ट रूप से बताया गया है। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है - "एक विचार लो, उसी को अपना जीवन बना लो और तब तक रूको नहीं जब तक कि हासिल न करो।"

हम इस पुस्तक में कर्मयोगी व भोगी को स्पष्ट रूप से देखने वाले हैं।

अनुक्रमणिका

1. युग..1

2. कार्य...5

3. व्यवहार व मन 14

4. कर्मयोगी vs भोगी..19

5. आचरण 27

6. अनुकरण 31

7. हित-अहित 36

8. भोगों में योग...38

9. अनुवाद..43

1. युग

यह तो जगह-जगह लिखा नजर आता है कि कोई भी जीव बिना कर्म किये नहीं रह सकता। हर जीव को कर्म करना ही पड़ता है पर यह कर्म युग अनुसार निर्धारित रहा है। इस धरती पर वेद अनुसार चार युग हुए हैं - सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलयुग। इन चार युगों के अनुसार, जैसे-जैसे वक्त बदलता गया, वैसे-वैसे कर्म और फल का स्वरूप, दोनों ही बदलते गये।

इस सृष्टि के आरंभ में सतयुग था। इस युग में सभी जीव अपना-अपना निर्धारित कर्म करते थे। उनको कर्मयोग में ज्यादा रुचि थी। उस युग में मनुष्य ध्यान-कर्म और कठोर तपस्या करके ज्ञान अर्जित करते थे। वे अपने साथ-साथ समस्त जीवों का उद्धार करने हेतु कार्य करते थे। इस युग में भोगीजनों की संख्या न के बराबर थी। सतयुग में मनुष्य बस सत् कर्म ही करता था। उसे फल की अपेक्षा नहीं थी, जैसे- अनेक ऋषियों ने मिलकर सतयुग में ऋग्वेद की रचना की थी और प्रभु श्री राम के पिताजी राजा दशरथ के गुरु, गुरु वशिष्ट भी इसी युग में जन्मे थे। इस बात से हम ये अंदाजा लगा सकते हैं कि इनकी कीर्ति आज भी अजरामर है और उन्होंने जो कर्म किया वह निर्धारित कर्म था। इसी कारण उनकी कीर्ति आज भी अजरामर है। हमें भी वह चुनना चाहिए, जो युग अनुसार निर्धारित हो।

फिर सतयुग का अंत होता है और प्रारम्भ होता है त्रेतायुग का। इस युग में जीवों को भौतिक चीजों का और भौतिक फल का लोभ प्राप्त हुआ। भौतिक फल की प्राप्ति मनुष्य जीव को उसका आनंद या उपभोग लेने के लिए विवश करती थी। इसे ही हम 'भोग' कहते हैं। इस युग में मनुष्य जन कर्म तो करते थे लेकिन उसका फल पाने की इच्छा भी उन्हें विवश करती थी। जैसे बना बनाया राज्य मिलेगा तो वह अयोध्या का राजा बनेगा, इस इच्छा से कैकेयी ने बेटे भरत के लिए राज्य और राम के लिए वनवास मांग लिया। राजा दशरथ जानते थे कि वह अपने वचन का पालन नहीं करेंगे, तो उनकी कुल कि कीर्ति को कलंक लगेगा, इसलिए उन्होंने कैकेयी को दिए वचन का पालन किया। ये बात प्रभु राम को बताई, तो उन्होंने जरा भी दुखी न होते हुये भोगों की जगह कर्मयोग अपनाया और चौदह साल अपने साथ-साथ समस्त जीव, साधु-सन्यासी और तपस्वियों की रक्षा करके अपनी कुल की कीर्ति को बढ़ाया। यहाँ पर माँ कैकेयी ने भोग को चुना और राजा दशरथ और प्रभु राम ने कर्मयोग चुना। परिणाम आपके सामने है।

जैसे सतयुग में सत्य आचरण करना और ज्ञान अर्जित करना ही निर्धारित कर्म था, वैसे ही त्रेतायुग में सत्य आचरण करना और अपने कुल की कीर्ति को ऊंचा करना ही निर्धारित कर्म था और यही निर्धारित कर्म करके एक राजा के पुत्र राम, 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' बने, फल स्वरूप उन्होंने अपने कुल की कीर्ति को युगों-युगों तक प्रकाशित किया। ये सब हुआ क्योंकि प्रभु राम ने कर्मयोग

अपनाकर युग अनुसार कार्य किया। इसके विपरीत रावण ने भी अपनी पूरी शक्ति और युक्ति दोनों दाँव पर लगाई थी, फिर भी उसका विनाश हुआ भोगी स्वभाव के कारण। उसने अनेक दुष्कर्म किये और अपने ऊंचे कुल को कलंकित किया। तो ये सब ध्यान में रखकर हमें कर्म का चुनाव करना है। हम कर्म चुनते समय अगर भोगी स्वभाव का चुनाव करेंगे, तो हमारी भी कुल की कीर्ति कलंकित होनी तय है।

इस तरह त्रेतायुग का भी अंत हुआ और प्रारंभ हुआ द्वापर युग का। इस युग में समस्त जीवों को फलस्वरूप कीर्ति, सत्ता और राजपाठ का मोह उत्पन्न हुआ। इस युग में मनुष्य के कर्म के फल स्वरूप कीर्ति और सत्ता हेतु उच्चतम कार्य करने लगा। इस युग में परिणाम की बजाय कर्म करने पर ज्यादा जोर दिया गया। द्वापर युग में श्रीकृष्ण जब अर्जुन को उपदेश दे रहे थे, तब उन्होंने एक ही बात पर बड़ा जोर दिया कि परिणाम की चिंता किये बिना जो निर्धारित कर्म है, तू उसे कर। दुर्योधण ने सत्ता के लालच में आकर पांडवों को जरा भी राज्य न देने का निर्णय लिया और इसी कारण सबसे बड़े महायुद्ध का प्रारंभ हुआ और स्वयं भगवान ने युद्ध में भाग लिया और अर्जुन को युग अनुसार कर्म करवाकर युग अनुसार फल प्रदान किया।

सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग गुजर गया और प्रारंभ हुआ कलयुग का। इस युग में सभी मनुष्य कर्म और युग अनुसार कर्म

करना भूल ही गया है, बस सभी भोगों में लीन है और अपनी राह भटक गया है, अज्ञान में अंधा हो गया है। इस तरह जो युग अनुसार कार्य करता रहा, वह अपनी और अपने कुल की कीर्ति को उजागर कर गया।

2. कार्य

जैसे-जैसे युग बदलते गये, वैसे-वैसे फल का स्वरूप भी बदलता गया। समय बदला और समय के साथ-साथ अलग-अलग नई-नई चीजों का मोह मनुष्य को होने लगा। ये सब बदलना तय ही था क्योंकि सृष्टि अपना कार्य अविरत कर रही थी। युगों के साथ-साथ सब बदला, पर एक चीज नहीं बदली और वह है 'कर्म'। कोई भी युग हो और कोई भी फल हो, कर्म करने के सिवा कोई भी विकल्प नहीं है। यहाँ पर सृष्टि अविरत अपना निर्माण कार्य कर रही है। सृष्टि में हर जीव उत्पत्ति के कार्य में आतुर है, जो उत्पन्न हुआ है उसका विनाश भी अटल है। फिर भी सृष्टि कभी खत्म नहीं होती। उसका एक ही कारण है - सृष्टि का अविरत कार्य। सृष्टि में जो निर्माण का कार्य होता है, उसे निर्धारित समय लगता है पर विनाश होने में या पतन होने में देर नहीं लगती। फिर भी निर्माण में सृष्टि आगे है। इसका कारण है निर्माण के प्रति आतुरता या कामुकता। कुछ चीजों का निर्माण और पतन बहुत तेजी से होता है। जैसे सूक्ष्मजीव मच्छी, मच्छर । तो कुछ चीजों में ये गति बहुत धीमी होती है। जैसे पहाड़, खाई और रेगिस्तान, समंदर । लेकिन दिन-ब-दिन निर्माण और पतन की गति तेजी से बढ़ रही है । इससे लाखों साल बाद ये धरती पूरी गेंद की तरह गोल हो जायेगी, ना खाई बचेगी ना पहाड़। सृष्टि में जो निर्माण चीजें हैं, उसका इस्तेमाल या

पतन करके भोगी जीव या मनुष्य अपना भरण-पोषण करते हैं। फिर भी प्रकृति की चीजें खत्म नहीं होतीं। ये उसकी अविरत कार्य की शक्ति है। ये धरती लोक जो है, वह पूरा कर्म के पाश से बंधा है - ऐसा भगवान श्री कृष्ण गीता के उपदेश में कहते हैं। यहां पर कोई भी युग हो और भगवान, दानव, राक्षस, कोई भी हो, उसे अपना चुना गया निर्धारित कर्म करना ही पड़ता है। जैसे-जैसे वक्त बदलता गया, वैसे-वैसे फल का स्वरूप भी बदलता गया, पर कर्म का रास्ता नहीं बदला। इस कलयुग में भी हर प्राणी को कर्म करना अनिवार्य है। यह कर्मयोगी का युग है, यहाँ पर बिना कर्म किये रहना, मतलब बिना साँस लिए रहने जैसा है। पर कर्म जो निर्धारित है, वही करना जरूरी है। बिना कर्म किए धरती पर रहना असंभव है। तो क्यों न हम निर्धारित कर्म ही करें। जैसा हमने पहले कहा था कि युग अनुसार कर्म करना पड़ता है, पर इस युग में भी पुरातन फल को चाहकर कर्म करने वाले मनुष्य मौजूद हैं। ऐसे लोग हर क्षेत्र में पाये जायेंगे। आप किसी भी क्षेत्र में कार्य कर रहे हों, उसमें बदलाव लाना जरूरी है। जरूरी नहीं, बल्कि मजबूरी है, नहीं तो आपका पतन होना निश्चित है। भले ही आप बदलें या न बदलें, प्रकृति और हर जीव बदलाव की ओर कार्य कर रहा है। इसलिए समय अनुरूप कार्य करना जरूरी है। जैसे सतयुग में हर जीव सत्य आचरण करके सदा भक्ति और ध्यान करके विद्या और ज्ञान अर्जित करते थे। उसके बाद त्रेतायुग आया। इस युग में मनुष्य कीर्ति रूपी फल अर्जित करने हेतु कार्य करते थे, पर उसी युग में भी भगवान की भक्ति और ध्यान

करने वाले मौजूद थे। ठीक उस तरह आज के इस कर्मयुग में भी पुरातन युग जैसे ध्यान और भक्ति रूपी कर्म करने वाले मनुष्य मिल जायेंगे। पर उन्हें युग अनुसार कर्म न करने के कारण उनको और उनकी आने वाली पीढ़ियों को दरिद्रता का सामना करना पड़ता है और दूसरों द्वारा दी गयी चीजों में अपना भरण-पोषण करना पड़ता है। इसी तरह आज भी ऐसे जीव हैं, जो बिना कर्म किए फल की अपेक्षा करते हैं, जैसे पहले के युगों में राक्षस करते थे। ऐसे जीवों को हम भोगी जीव कह सकते हैं। खुद कर्म न करना और दूसरों द्वारा किये गये कर्म का फल हड़पने की कोशिश करना, इनके ऐसे कर्मों को कभी-कभी फल जरूर मिलता है। पर इनके इन बिना निर्धारित कर्मों के कारण इन्हें अनेकों दुखों का सामना करना पड़ता है। बिना कर्म किये कभी कभार मिला यह फल उनसे कर्म करने की शक्ति छीन लेता है और बिना कर्म किये फल की चाहत रखने की उनकी आदत उनको अपनी स्थिति से पतन की ओर लेकर जाती है। इसमें मनुष्य समेत सभी जीव हो सकते हैं।

ऐसे जीवों की संख्या जब कर्म योगी से ज्यादा हो जाती है, तब समाज में अशांति फैलती है। बिना कर्म किए फल की अपेक्षा रखने वाले मनुष्य कर्म योगियों को बड़ा विचलित करते हैं। कर्मयोगियों को समाज द्वारा दिये गये कष्ट जब असहनीय हो जाते हैं, तब भोगीजनों का पतन का समय निकट आता है। भोगियों के युग में एक महान कर्मयोगी का निर्माण होता है और वह अपने साथ-साथ अनेकों लोगों का हित देखकर कार्य करता है। उस महान

कार्य से उसके साथ-साथ सभी जीवों का कष्ट दूर होता है और उसके कुल की कीर्ति अनेकों युगों तक प्रकाशमान हो जाती है। उसके कर्मफल का आनंद वह खुद नहीं बल्कि बड़े-बड़े समुदाय अनेकों समय तक भोगते हैं। महान कर्मयोगी दिखने में सामान्य होते हैं पर उनका महान लक्ष्य और खुद से पहले औरों के बारे में सोचने का नजरिया उन्हें औरों से अलग बनाता है। इसके कई उदाहरण हैं। इतिहास ऐसे कर्मयोगियों पर लिखा जाता है। जैसे - जब अंग्रेज भारत आये और उन्होंने भारत देश में अनेकों सामान्य लोगों पर अन्याय-अत्याचार करके उनसे काम, मजदूरी कराते थे, इसका विरोध करने वालों को कालापानी की सजा सुनाई जाती थी। लाखों लोगों की जानें जाती देख महात्मा गांधी, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, नेता सुभाष चंद्रबोस और अन्य कुछ लोगों ने अपना व्यक्तिगत हित न देखकर अनेकों लोगों के हित में कार्य किया और अंग्रेजों के इस कष्ट से सभी भारतीयों को आजाद किया। उनके इस महान कर्म का फल करोड़ों की संख्या में आज भी लोग भुगत रहे हैं और यह युग निहाय कर्म का एक सटीक उदाहरण है। 1879 में थॉमस अल्वा एडिसन ने बल्ब का आविष्कार किया और सभी दुनिया को प्रकाशित कर दिया। कई हजार बार विफल होने के बावजूद भी फल को स्पष्ट देखकर कर्म जारी रखा और युग अनुसार फल प्राप्त किया। सैकड़ों सालों से पूरी दुनिया उनके महान कर्म का फल भुगत रही है।

इस बात का इतिहास साक्षी है कि जब-जब दुनिया में अशांति फैलती है, तब-तब एक महान कर्मयोगी जन्म लेता है और अपने महान कर्म से समाज में शांति प्रस्थापित करता है। हर युग में ऐसा हुआ है। समाज में अशांति फैली और किसी कर्मयोगी ने शांति प्रस्थापित की। यहां तक ठीक है, पर महान कर्मयोगियों ने शांति प्रस्थापित करने हेतु एक अलग समुदाय का निर्माण किया है, उसे युग अनुसार धर्म-समुदाय का निर्माण करके उसे एक विहीत कर्म या निर्धारित कर्म भी दिया है। इसका मतलब युग अनुसार निर्धारित कर्म न करने से ही समाज में अशांति फैलती है और यह अशांति रोकने हेतु योगी निर्धारित कर्म देते हैं। पर युग बदलने के बाद भी यह समुदाय नहीं बदलता है। बदलना जरूरी है, सदी बीत गई पर वही चलन चलता आ रहा है। इसके कई उदाहरण हैं, जैसे - समाज में सब कुछ ठीक होने के बावजूद भी कुछ लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए समाज में धर्म या समुदाय के नाम से अशांति निर्माण करते हैं और समाज में हुई अशांति में अपना भोग साध्य कर लेते हैं।

सबसे पुराना धर्म है सनातन धर्म। इसके कई प्रमाण/उदाहरण हैं। हमारे शास्त्र, ग्रंथ, वेद, पुराण इत्यादि, यह शास्त्र सभी दुनिया को अपनाने योग्य है। इसमें जीने का सही रास्ता दिया गया है मगर फिर भी जब प्राणी-मात्र में अशांति फैलती है, तब जीवों की शांति के लिए एक नये धर्म का निर्माण होता है। एक अलग धर्म और समुदाय का निर्माण करके उन्हें निर्धारित कर्म दिया जाता है। एसे

कर्मयोगी के कर्म का फल अनेकों मनुष्य और जीव युगों-युगों तक भोगते हैं। जैसे - अमेरिका में 1960 में रंगभेद को लेकर बहुत असमानता फैली थी। अमेरिका में अफ्रीकी लोगों को बहुत ही निचला दर्जा मिलता था। उनसे मजदूरी और शारीरिक श्रम वाला काम करवाया जाता था। एक बार उस वक्त मार्टिन लूथर किंग एक बस से सफर कर रहे थे। उस बस में एक काली रंग वाली गर्भवती महिला सफर कर रही थी। काली होने के कारण उसे किसी ने बैठने की सीट नहीं दी। इस बात से लूथर किंग बहुत दुखी हो गये और उन्होंने रंगभेद के खिलाफ आवाज उठाई। बहुत दिन संघर्ष चलने के बाद उन्हें 1968 में सफलता मिली और अमेरिका में 'काला-गोरा समान' यह नियम लागू किया गया। इससे यह दिखाई देता है कि लूथर किंग और उनके सहकारी चंद लोगों के कारण महान/कठिन परिश्रम से आज कई लोग शांति का जीवन व्यातीत कर रहे हैं। ऐसे कई और उदाहरण हैं।

तो जब-जब समाज में अशांति हुई, तब-तब एक नये धर्म का निर्माण हुआ, यह बात हम कर रहे थे। तब-तब किसी कर्मयोगी ने नये धर्म की स्थापना की। पर युग बीतने के बाद यह धर्म-व्यवस्था कायम है, जो समाज में शांति प्रस्थापित होने के बाद नष्ट होनी चाहिए थी। इस सृष्टि का पुरातन धर्म है सनातन धर्म, जो सृष्टि-निर्माण से पहले था और अभी वही एक ही होना चाहिए था, पर कुछ लोगों ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए धर्म-व्यवस्था को कायम रखा है। उसका उदाहरण है कि जाति-व्यवस्था को अपने

व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए राजनीतिक उपयोग में लाया जाता है। जैसे समाज में असमानता को रोकने के लिए आरक्षण-व्यवस्था को लाया गया था, पर बहुत समय बीतने के बाद भी यह चलता ही जा रहा है। इसे कायम रखा है और इसकी वजह है व्यक्तिगत स्वार्थ, यानी दूसरे द्वारा किये महान कर्म का फल भोगने की भोगी जीवों की कोशिश है।

यह तो है कि धरती पर बिना कर्म किये रहना असंभव है क्योंकि सृष्टि अपना बदलाव का कार्य अविरत कर रही है। इस सृष्टि में हर चीज निर्धारित समय ही कार्य करती है। बाद में उसे बदलना अनिवार्य है। जो जीव सृष्टि में युग अनुसार कार्य नहीं करते, वह अपनी स्थिति से गिर जाते हैं। उनकी आनेवाली पीढ़ी को कष्ट और दरिद्रता का सामना करना पड़ता है।

इसका एक उदाहरण है कि सतयुग में लोग जैसे ज्ञान व पूजा-पाठ करके अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ फल प्राप्त कर लेते थे, उसी तरह कलयुग में निर्धारित कर्म न करके अगर पूजा-पाठ और ध्यान करेंगे, दूसरा कुछ भी कर्म न करेंगे, तो उन्हें और उनकी आनेवाली पीढ़ियों को लोगों से दान में मिली चीजों से अपना भरण-पोषण करना पड़ेगा। कलयुग में श्रेष्ठ बनने का एक ही रास्ता है और वह है 'कर्मयोग'। इस युग की एक अदभुत शक्ति है कर्मयोग, जो दूसरों का कष्ट हर सकती है, अंधकार को भी नष्ट कर सकती है। सभी अशांति को रोककर शांति प्रस्थापित कर सकती

है। कर्मफल से आप जिसपर चाहो, उसपर अपनी कृपा दृष्टि बनाकर उसका कष्ट हर सकते हैं।

जैसे-जैसे युग बदलते गये, वैसे ही भगवाग की भक्ति के स्वरूप ही बदलते गये। सतयुग में भगवान को ध्यान और भक्ति प्रिय थे, त्रेतायुग में भगवान को सत्य आचरण प्रिय हो गया और अब निर्धारित कर्म करने वाला अति प्रिय है। ध्यान योग से जो फल प्राप्ति होती है, उससे जल्द कर्मयोग से फल की प्राप्ति होती है। कहते हैं कि कर्ण पिछले जन्म में राक्षस था। उसके दुष्ट कर्म के फलस्वरूप उसे मारने के लिए इस जन्म में श्रीकृष्ण भगवान और उसका जन्म हुआ था। पर इस युग में अच्छे और बुरे कर्म का फल तुरन्त मिलता है। कलयुग की एक ही पूजा धर्म है और वह है - कर्म, निरन्तर कर्म। कर्म वह हथौड़ी है, जो हल्की लगती है पर उसकी निरन्तर चोट से किसी भी पत्थर से मूरत निकल आती है। यह प्रकृति निरन्तर कार्य कर रही है। इसलिए यहाँ का हर जीव कुछ करे या ना, करे फिर भी वह कर्म ही कर रहा है। ऐसा गीता ज्ञान का सिद्धांत है। यहाँ पर हर जीव बदलाव का हिस्सा है। श्री कृष्ण के कहे अनुसार कोई भी चीज सृष्टि में बिना कर्म किए नहीं रह सकती। तो क्यों ना महान उदीष्ट और अनेकों लोगों का हित देखकर ही कार्य किया जाय! अगर महान उदीष्ट ना रखा, तो हमारे कर्म का नतीजा बुरा आता है। इसलिए महान उदीष्ट रखकर निरन्तर कार्य करते रहना चाहिए। जो व्यक्ति बड़ा लक्ष्य रखके कर्म नहीं करता, उसके मन की शांति भंग हो जाती है। ऐसा मनुष्य नशे में रमण करने लगता है। फिर ऐसा

जीव पतन की ओर चल पड़ता है। आप खुद का हित छोड़कर अनेकों जीवों का हित देखकर जो भी कार्य करते हैं उसका परिणाम अच्छा ही होता है। इस सृष्टि के जो जीव हैं, वे परिणाम की चिंता करके कार्य करते हैं। पर चिंता छोड़कर कार्य करते रहना चाहिए, परिणाम अच्छा ही होता है। इस युग में कर्म करने की बजाय फल की जो ज्यादा चिंता करता है, वह जीव ज्यादा कष्ट उठाता है। अगर कोई भी इंसान किसी भी विशिष्ट चीज को लेकर निरंतर प्रयास करता रहे और उसे उस काम के बारे में पूरी समझ न हो, फिर भी वह अच्छे परिणाम प्राप्त करता है क्योंकि निरंतर कार्य करने से किसी भी चीज की ज्ञान प्राप्ति हो जाती है, जैसे निरन्तर दीवार को धक्का देने से दरवाजा हाथ आता है। निरन्तर प्रयास करने को ही कार्य कहते हैं। इस युग में बस कर्म ही है, जो इंसान को तार सकता है। कर्म के बिना परिणाम की अपेक्षा करना व्यर्थ है।

3. व्यवहार व मन

युग अनुसार इस सृष्टि में व्यवहार-चक्र चलता है। कुछ पाने हेतु कुछ देना भी पड़ता है, जैसे सतयुग में ज्ञान और शिक्षा एक-दूसरे को देकर यह संसार चलता था। पर प्रकृति बड़ी गति से से बदलाव ला रही है। आज हर कोई सेवा पाना चाहता है और इस सेवा को पाने के लिए कोई–न-कोई सेवा हमें समाज को प्रदान करनी पड़ती है या सेवा देने का कार्य निरन्तर करते रहना चाहिये। हमारा लक्ष्य ज्यादा सेवा लेने की बजाय सेवा देना होना चाहिए। किंतु समाज कि स्थिति अभी उल्टी है। यहाँ हर कोई उच्चतम सेवा पाना चाहता है पर सेवा देना कोई नहीं चाहता है। जो जीव समाज में उच्चतम सेवा प्रदान करता है वह श्रेष्ठ जीव बन जाता है जैसे सत युग मे ज्ञान प्रदान करने वाला सर्वश्रेष्ठ था त्रेता युग में राजा महाराजाओ में जो ज्यादा अर्पण करता था दाण करता वह सर्वश्रेष्ठ बन जाता था और द्वापर में जो राजा जनता की रक्षा करता था वह सर्वश्रेष्ठ कहलाता था। वैसे ही कलयुग में भोगों की चीजें या सेवा प्रदान करने वाला सर्वश्रेष्ठ कहलाता है। कलयुग में ऐसी कई सेवाएँ हैं, जो प्रदान करके आदमी सर्वश्रेष्ठ बन सकता है। जैसे - आज के युग में कार, कपड़े या अन्य जो सेवाएँ हैं, उन्हें प्रदान करके आदमी श्रेष्ठ बन सकता है।

इसके उल्टा जो जीव सेवा प्रदान करने की बजाय सिर्फ सेवा लेना चाहते हैं, वह समाज में और अपने जीवन में स्थिति सेनीचे गिरते रहते हैं और पतन के मार्ग पर चलते हैं। ऐसे तब तक चलता है जब तक कि वह समाज को कोई सेवा प्रदान न करे। सेवा लेना भोग की श्रेणी में आता है और सेवा देना कर्म की श्रेणी में आता है। दूसरों को सेवा प्रदान करना निर्माण कार्य है और सिर्फ सेवा लेना भोगी जीवों की पहचान है।

इस युग में बस सेवा प्रदान और प्रदान ही करते रहना चाहिए। हो सकता है ऐसा बार-बार करने से इंसान को लगे कि यह काम अच्छा नहीं है और दूसरे जो करते हैं वह काम अच्छा है, पर अच्छा और बुरा खुद तय किया हुआ भाव है, संपूर्ण अच्छा और संपूर्ण बुरा इस धरती पर कुछ भी नहीं है। जैसे अनेकों ग्रह और तारों से मिलकर गैलक्सी बनता है, ठीक उसी तरह अनेकों गैलक्सी से मिलकर हमारा मिल्की वे बनता है और यह चक्र निरंतर चलता रहता है। ठीक इसी तरह दुनिया की हर चीज में लागू होता है। कोई समस्या हो या किसी चीज की अपेक्षा हो, कुछ देखने का, कुछ खाने का, कुछ पीने का, कुछ पाने का हो या किसी भी और चीज का हो, हर एक वस्तु से ब्राह्मंड में एक दूसरी चीज का जन्म होता है। इसलिए सोच-विचार में वक्त जाया ना करके बस कर्म और कर्म करते रहें। दुनिया में जो कुछ भी किया जा सकता है, वह बस कर्म और कर्म से ही किया जा सकता है। किसी के भी प्रति भेदभाव, प्रेमभाव या घृणा का भाव रखणा व्यर्थ है। जैसे - अगर हमें किसी

का दुख देखा नहीं जा रहा, इसका मतलब उसके प्रति हमारी करुणा जागृत हो गयी है। पर यह भाव व्यर्थ है। दुख दूर करने हेतु हमें कुछ तो कार्य करना पड़ेगा, तभी हम परिणाम की उम्मीद कर सकते हैं। प्रार्थना के लिए उठने वाले हाथों से ज्यादा मदद के लिए आगे बढ़ने वाले हाथ श्रेष्ठ होते हैं, ऐसा स्वामी विवेकानंद कहते हैं। जैसे रेल की पटरी पर फँसे बच्चे को हजारों लोग देखकर विवश हो रहे थे लेकिन आगे बढ़कर जिसने बचाया उसका दुनिया भर में गौरव होता है। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं। किसी के प्रति हमें अत्यन्त क्रोध आ रहा है या किसी के द्वारा किया गया अधर्म हमें देखा नहीं जाता, तब भी उसके प्रति मन में द्वेष करना व्यर्थ है। अच्छा होगा हम अपेक्षित परिणाम हेतू कार्य करें।

यह सृष्टि बस कर्म करती रहती है। वह अच्छा या बुरा भाव नहीं रखती। इस दुनिया में एक ही भाव सच्चा है, वह है - ममता का भाव, जो दुनिया से कभी खत्म नहीं होगा। यह भाव सृष्टि हर एक माता में उत्पन्न करती है। ममता का भाव ऐसा भाव है जिसकी तुलना दुनिया की किसी भी वस्तु या अन्य भाव से नहीं कि जा सकती। इस सृष्टि में जो भी जीव उत्पन्न होता है वह अपनी औलाद के प्रति ममता का भाव लेकर ही उत्पन्न होता है। ममता एक ऐसा भाव है जिसका वर्णन शब्दों में करना संभव ही नहीं है। कोई भी कर्म करते वक्त हमारा नजरिया बहुत मायने रखता है। सकारात्मकता से किया गया कर्म कभी भी निष्फल नहीं हो सकता। कर्मयोगी अपने भविष्य में निर्माण को होते हुए देखता है, वैसे ही

भोगी जन भविष्य में विनाश होते हुए देखते हैं। जिस काम को करते हुये हम सफल नजरिये से देखते हैं वह सफल ही होता है और जिस काम को हम विफल होते हुए देखते हैं वह विफल ही होता है। दुनिया की हर चीज अस्तित्व में आने से पहले किसी के नजरिया में तैयार हो जाती है। वेद, पुराण, ग्रंथ और विज्ञान, पूरी दुनिया पहले किसी के मन में तैयार हुई है। इन सबका मन की शक्ति से निर्माण किया गया है। मतलब साफ है कि जो परिणाम हम चाहते हैं, उसे हम स्पष्ट रूप से सोचें और उसकी अपेक्षा कार्य करें।

हमारा मन और यह प्रकृति, दोनों का गहरा संबंध है। कोई भी घटना घटित होने से पहले हमारे मन को उसकी आशंका हो जाती है। हमारा मन इतना शक्तिशाली है कि इस सृष्टि को भी हमारे मन के अनुरूप कार्य करने पड़ते हैं। पुराने ग्रंथों में जो मोह और माया की शक्ति का वर्णन किया जाता है, वह झूठ नहीं है, वह मन की प्रबलता है और मन की प्रबलता के आगे असंभव जैसी कुछ भी नहीं है। जैसे - बजरंग बली हवा में उड़ते थे या किसी राक्षस को दूर से ही भस्म कर देना, मन की गति से भ्रमण करना, मन जहाँ चाहे, वहाँ प्रकट होना, यह सब मन की प्रबलता से ही संभव है। पुराने समय में ऋषि-मुनि घोर तपस्या करके मन को प्रबल बनाते थे, तो उन्हें आत्मज्ञान प्राप्त हो जाता था। उन्हें कुछ भी जानना होता था, तो वह अपनी प्रबल आत्मशक्ति का उपयोग करते थे। अपने मन का बल इस्तेमाल करने के लिए अपने मन का नियंत्रण में होना बहुत जरूरी होता है। मन की शक्ति से दूर घटित होने वाली

घटनाओं को देखा जा सकता है, जिस जगह पर आप उपस्थित नहीं है उस जगह पर भी जो घटना घटित हो रही है उसे भी अपनी आत्म शक्ति से देखा जा सकता है। जैसे - कुरूक्षेत्र में जो भी चल रहा था वह संजय को अपनी दिव्य-दृष्टि से सब दिखाई दे रहा था और सुनाई भी दे रहा था और जो उन्होंने देखा वही अंधे धृतराष्ट्र को बताया। इसे ही हम श्रीमद्भगवद्गीता या श्री कृष्ण उपदेश कहते हैं।

इसके अलावा प्रबल आत्मबल वाले महान पुरुष भविष्य की भी अचूक कल्पना कर सकते हैं। यह सब करने के लिए हमें अपने मन की या आत्मशक्ति को प्रबल करने के लिए हमें कठिन अभ्यास करना पड़ता है। यह प्रबल आत्मबल पाने के लिए हमें कठिन अभ्यास करना पड़ेगा या उसके हेतु कार्य करना पड़ेगा। दुनिया में कर्म या कार्य के बिना किसी का भी रहना असंभव है।

4. कर्मयोगी vs भोगी

दुनिया में कार्य किए बिना रहना असंभव है। कर्म में इतनी शक्ति है की एक कर्मयोगी के कर्मफल से सौ भोगी अपने जीवन का निर्वहण कर सकते हैं। अधिक से अधिक लोग अगर कर्मयोग अपनाकर निरन्तर कार्य करते रहे, तो धरती पर अधिक तेजी से बदलाव होगा और अनेकों जीवों के कष्ट और तकलीफें दूर होने में मदद होगी। परिवार हो या गाँव हो, मोहल्ला हो या पूरी दुनिया हो, कोई भी कोना हो इसमें कोई एक कर्मयोगी होता है जिसके कर्म के फल से बाकी भोगी लोगों के जीवन का क्रम चलता रहता है।

जैसे - घर में कोई एक कर्मयोगी होता है जो निरन्तर कर्म करता रहता है, तभी अन्य व्यक्ति अपने भोगों को भोग पाते हैं। ठीक इसी तरह पूरी सृष्टि कार्य कर रही है और समाज में कोई एक महान योगी होता है, जो कठिन तपस्या करके परम ज्ञान प्राप्त कर लेता है और उसके ज्ञान प्रकाश से समाज का अज्ञान मय अंधकार दूर होता है और अन्य लोग अपना भोगी जीवन व्यतीत करते हैं, जैसे - स्वामी विवेकानंद और भगवान बुद्ध।

ठीक उसके उल्टा होता है भोगी मनुष्य, जो एक कर्मयोगी द्वारा किया गया कर्म का फल भोगने में अपना लक्ष्य केंद्रित करता है। भोगी जनों की संख्या बढ़ने से समाज में दुख का निर्माण होता

है। भोगी का अर्थ होता है अपने आनंद के लिए भौतिक चीजों का उपयोग करना और भोगों में चीजें समाप्त होती हैं, निर्माण नहीं होतीं। भोगियों की संख्या बढ़ने के कारण कर्मयोगियों द्वारा निर्माण की गई चीजें नष्ट हो जाती हैं और ऐसा बार-बार होने से समाज में अशांति निर्माण होती है। सबसे बड़ा कर्म योगी सृष्टि है, यहाँ पर बाद में योगीजन आते हैं।

भोगी ज्यादा होने से समाज में अशांति फैलती है और समाज अस्वस्थ हो जाता है। हिंसा और आक्रोश बढने लगता है। ऐसा होने के बाद समाज मे कोई योगी जन्म लेता है। योगी के जन्म लेने का मतलब कोई सामान्य जीव महान कर्म करने का निश्चय करता है और निरन्तर कार्य करके एसी चीजों का निर्माण करता है जिससे समाज में शांति कायम रहे। सभी जीव सुखी रहे। इस तरह एक कर्मयोगी के एक महान कार्य का फल समाज के असंख्य लोग भोगते हैं। जैसे - समाज मे अशांति और दुख देखकर भगवान बुद्ध बहुत दुखी हो गये और उन्होंने कठोर ध्यान और तपस्या करके ज्ञान अर्जित किया अपने ज्ञान के माध्यम से समस्त जीवों का दुख दूर करने हेतु कार्य किया समाज में शांति लाने हेतु उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की और उन्हें निर्धारित कार्य दिया। आज असंख्य लोग उनके कर्म का फल भोगते हैं और जब भारत में मुगल सल्तनत का राज था, तब राजे छत्रपति शिवाजी का जन्म हुआ और उन्होंने अपने कार्य से लोगों को अन्याय से मुक्ति दिलाई। उसके बाद जब भारत में अंग्रेजो का राज था तब गांधी-नेहरू, सुभाष चंद्र बोस,

अंबेडकर जैसे महान लोगों ने अनेकों लोगों का हित देखकर कार्य किया, तब भारत को आजादी मिली और उनके कार्य का फल आज करोड़ों लोग भोग रहे हैं। इसलिए हमेशा याद रखें कि हमें भोगी नहीं, कर्मयोगी बनना है। कर्मयोगी तो निर्माण का कार्य करता ही है, पर उसका एक लक्ष्य है कि वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के बजाय अनेकों लोगों के हित में कार्य करता है। इसलिए अपना दृष्टिकोण हमेशा विशाल रखें और महान लक्ष्य रखकर हमेशा कार्य करें, जैसे - स्वामी विवेकानंद जिन्होंने अनेकों लोगों का दुख दूर करने के लिए सुख-चैन त्यागकर समाज में भ्रमण करते रहे और गरीबी में जीवन बिताकर लोगों को मार्गदर्शन करते रहे ताकि गरीबी के कारण उनका पूरा परिवार कष्ट न सहे।

इस पृथ्वी पर हर एक जीव जिंदा रहने के लिए दूसरे जीव का भक्षण करता है। यह चक्र निरंतर चलता आ रहा है। ऐसा होने के बावजूद भी यहाँ पर हर एक चीज घटने की बजाय बढ़ती ही जाती है। इसका यह कारण है कि सृष्टि, निर्माण के कार्य में कोई भी बाधा नहीं आने देती। तीनो लोकों में सबसे बड़ा कर्मयोगी सृष्टि है। यहाँ पर हर एक चीज को उत्पन्न करने के लिए कार्य करना पड़ता है पर उसे नष्ट करने कि जरूरत नहीं होती। कर्म ना करने के कारण पतन अपने आप ही हो जाता है। इसलिए अच्छा कर्म निरंतर करते रहना पड़ता है, वरना वह नष्ट हो जाता है। इसके उलट अच्छी चीजें ना करने से बुरी चीजें अपने आप उत्पन्न हो जाती हैं। यह सृष्टि का नियम है और यह चक्र कभी रुकता नहीं। इस सृष्टि में हर एक जीव

दूसरे जीव पर निर्भर है, तो यहां कुछ चीजें नष्ट होने की संभावना हो सकती है। जब सभी जीव अपना कर्मयोग छोड़कर भोगों की और आकर्षित होंगे, तब ऐसा हो सकता है क्योंकि योगी निर्माण का कार्य करता है और भोगी पतन का कार्य करता है। सृष्टि सिर्फ कर्म योग अपनाए हुए है। जैसे - सृष्टि कोई भी भोग नहीं भोगती, वह एक बीज से अनगिनत फल निर्माण करती है और अनगिनत फल से अनंत वृक्ष और फल देने वाले पौधे बनते हैं। इसलिए कितने भी भोगी जीव बढ़ने से भरण-पोषण करने की सृष्टि की क्षमता अंत नहीं होती। यह तभी समाप्त होती है जब भोगी जीव अपने लालच से सृष्टि को हानि पहुंचाता है।

धरती पर सजीव जितनी भी उर्जा का इस्तेमाल करते हैं, उससे दोगुनी उर्जा सृष्टि उत्पन्न कर रही है। बहुत से ऐसे ऊर्जा स्रोत हैं जिनका इस्तेमाल करने में इंसान अभी सक्षम नहीं है। ग्रैविटी और वायरलेस एनर्जी ट्रांसफर जैसे विषयों में इंसान जब और तरक्की करेगा तब इस्तेमाल होने वाली एनर्जी वह जगह पर ही खोज निकालेगा। यहां पर सालों, सालों से सजीव धरती पर भोगों में चीजों का पतन कर रहे हैं पर उससे दो गुणा चीजें यहां पर उत्पन्न होती हैं। कहते हैं कि उर्जा को समाप्त नहीं किया जा सकता पर धरती पर एसी कोई चीज नहीं है जिसे पूर्णतः समाप्त किया जा सकता है। इसलिए ध्यान में रखने वाली बात यह है कि कर्म हमें निर्माण की ओर ले जाता है और भोग पतन की ओर ले जाता है।

धरती पर जो भी सजीव कार्य करता है वह अपने स्वभाव अनुसार कार्य करता है उसकी जो भी आदत है वह धीरे-धीरे कर्म के रूप से संचय होती जाती है और उसके परिणाम स्वरूप उसे फल प्राप्त होता है। यह सिद्धांत दुनिया के हर कोने में लागू होता है। अपने आदत के कारण एक गरीब राजा बनता है और एक राजा अपने किसी आदत के ही कारण गरीब बनता है। अच्छी आदतों का परिणाम हमेशा अच्छा होता है और बुरी आदतों का फलस्वरूप हमेशा बुरा होता है। फिर से यहां पर दृष्टिकोण मायने रखता है, इसलिए अपना दृष्टिकोण हमेशा विशाल रखें और खुद के हित में कार्य ना करते हुए अनेकों लोगों का हित देखकर कार्य करें। इसके परिणामस्वरूप फल बहुत ही मीठे और अपने कुल का गौरव बढ़ाने वाले होते हैं। इस सृष्टि में जीवित रहने के लिए जैसे हमें उर्जा की जरूरत होती है और वह इस सृष्टि में पर्याप्त मात्रा में है, ठीक उसी तरह हमारे जीवन के लीए जो भी आवश्यक है वह हमें मुफ्त में मिलता है। हमें अमृत समान चीजें सृष्टि में मुफ्त मिलती है मगर जहर समान चीजों को हमें खरीदना पड़ता है, जो भोगों को चाहिए होती है। असल में भोग हमसे अप्रत्यक्ष रूप से सेवा करवाता है और कर्म का फल हमें सरल सेवा देता है। जैसे - स्वास्थ्य कमाने के लिए व्यायाम व योग हमारे लिए मुफ्त है, जो हमारे हित में भी है, तो दूसरी तरफ सिगरेट व दारू हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है और ये विलासिता की चीजें हमें खरीदनी पड़ती हैं। जिसके लिए हमें कर्म द्वारा मिला फल अर्पण करना पड़ता है ऐसी कई चीजें हैं,

जो हमारे हित में नहीं और उसे हमें खरीदना पड़ता है और जो हमारे हित में है वह प्रकृति कर्म द्वारा हमें मुफ्त में प्रदान करती है। तो सरल सी बात है कि कर्म हमारे हित में है और भोग हमें हानि पहुंचाते हैं। इसलिए कर्मयोगी का यह युग है।

भोगों को भोगने में हमें बड़ा आनंद आता है और कर्म को करने में हमें कष्ट लगता है, पर जीवन की यह सच्चाई है कि हमें कर्म करते रहना पड़ता है और कष्ट सहते रहना पड़ता है, उसी का नाम जीवन है। जैसे कर्म किए बिना धरती पर रहना संभव नहीं, ठीक उसी तरह बिना कष्ट सहे धरती पर रहना असंभव है। हम जैसे जैसे-जैसे नित्य कर्म करते जाते हैं, वैसे-वैसे हममें कर्म के प्रति रुचि बढ़ती जाती है और आनंद उत्पन्न होने लगता है। ठीक उसके उल्टा भोगों में हमें शुरु-शुरु में बड़ा आनंद आता है पर धीरे धीरे वह कम होता जाता है, जैसे - कोई स्टूडेंट जब अपनी डिग्री की परीक्षा देता है तो उसे बड़ा कष्ट लगता है, बहुत ही श्रम उसे करना पड़ता है, पर एक बार वह डिग्री हासिल करे तो उसे हमेशा आनंद मिलता है। ठीक उसके उल्टा जो विद्यार्थी डिग्री की परीक्षा के समय कठिन श्रम करने की बजाय घूमने-फिरने का आनंद उठाता है उसे जीवनभर श्रम करके या कष्ट सहके अपना भरण-पोषण करना पड़ता है। शुरु में हम जिसे कष्ट या समस्या कहते हैं, काम में निपुण होने के बाद वही हमें आनंद देता है।

जीवन में हम जो भी कर्म करते हैं, उसे उसके परिणामस्वरूप फल मिलता है। यह तो हम शुरु से सुनते आ रहे हैं, पर कर्मफल मिलने का एक मैकेनिज्म है। सृष्टि का नियम है, यहां पर हर सजीव आदत का गुलाम होता है। हमें वह अच्छा या बुरा जो भी कार्य करता है वह उसके प्रति आसक्त होने लगता है और धीरे-धीरे उसमें बंधता चला जाता है, यह भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है। तो वह अच्छा-बुरा जो भी कार्य है, सजीव को उसकी आदत होने लगती है और उसके अच्छे-बुरे आदत के परिणामस्वरूप उसे फल प्राप्त होने लगता है।

कर्म और भोग में सबसे बड़ा अंतर यह है कि कर्म करने वाला व्यक्ति निर्माण का कार्य करता है और निर्माण का कार्य भगवान का होता है। इसलिये कर्मयोगी भगवान के समान होता है। ठीक उसके उल्टा, भोगी मनुष्य अपने भोगों के लिए सृष्टि की चीजों का पतन या नाश करता है और नष्ट करने का काम शैतान का होता है। तो इसका मतलब यह कि भोगों में चीजों का नाश करने वाला मनुष्य, शैतान के बराबर होता है। भोगी मनुष्य को भोगों के लिए दुनिया की अनेकों चीजों की आवश्यकता होती है। वह अनेकों चीजों पर निर्भर होता है। इसके उल्टा, जो कर्मयोगी होता है वह स्वयं पर निर्भर होता है। उसे दुनिया की चीजों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता और जिसकी उसे जरूरत पड़ती है वह चीजें योगी अपने कर्म से निर्माण कर लेता है, जैसे - सांसारिक मनुष्य जो कर्मयोग अपनाता है, वह अपने कर्म से संसार की उपयोगी वस्तुओं का

संग्रह करता है, पर भोगी मनुष्य कर्म न करके सांसारिक वस्तुओं का विनाश करता है और उसके परिणामस्वरूप भोगी की आने वाली पीढ़ियाँ कष्ट सहती हैं।

5. आचरण

पहले बताये अनुसार, कार्य हर युग में अलग रहा है। पहले भक्ति-ध्यान जैसी चीजो ं से जीवन में मंगलमय घटित होता था, पर यह कर्मयुग है, यहाँ सदा निर्धारित कर्म करते रहना पड़ता है, तभी सब मंगल होता है। यहाँ निर्धारित कर्म ना किया जाय और किसी भी तरह का धार्मिक पाठ किया जाय, तो उससे मंगल घटित होना अनिश्चित है। जैसे - इस बदलते युग में किसी काम को या चीज को करने का यंत्र, सामग्री है तो वह काम हाथ से कुशल करने का प्रयास विफल है। उससे जीवन में ज्यादा उदय होने की संभावना कम हो जाती है।

इस युग में कर्म ही है जो सबकुछ अच्छा कर सकता है। यहाँ कर्म करने वाला ही नायक के रूप में है। यहाँ हर कोई सोचता है कि मेरी औलाद अच्छा बर्ताव करने वाली निकले पर उसके परिणाम हेतु कार्य ना करना और सिर्फ फल की उम्मीद करना व्यर्थ है। उसे उद्देश्य से कार्य करना पड़ेगा, उसे खुद महान और विशाल दृष्टिकोण रखकर निरंतर कार्य करना होगा, तभी हर जीव की औलाद उसका अनुकरण करेगी। इस सृष्टि में सजीव ऐसा एकमात्र है जो आदत का गुलाम है, जो देखता है वही करता है। इस युग में और बीते युगों में जीवों की एक महत्त्वपूर्ण अपेक्षा रही है और वह है कीर्ति या सम्मान यह जीवन जीने के लिए एक महत्त्वपूर्ण इंधन है। हर युग में

कीर्ति ऐसा फल है जिसका स्वरूप नहीं बदला। कीर्ति हर सजीव को फल स्वरूप अति प्रिय है। पर हमें इसे पाने हेतु कार्य नहीं करना है। महान उद्देश्य और अनेकों लोगों का हित देखकर किया गया कर्म हमें कीर्ति रूपी फल प्रदान करता है। महान उद्देश्य से किये गये कर्म से हमारा आत्मसम्मान भी बढ़ता है और यह आत्मसम्मान महान कर्म करने की उर्जा प्रदान करता है, इतनी उर्जा जो बाहरी किसी भी वस्तु से नहीं मिल सकती और यही सबसे बड़ा रहस्य है।

जो व्यक्ति कीर्ति रूपी फल पाने हेतु महान कार्य करने का ढोंग करता है या कोई ढोंगी जीव महान कार्य करने का बहाना करते हैं। उन्हें क्षणिक फल मिल भी सकता है पर वह खुद के प्रति आत्म सम्मान खोने लगते हैं। वह जीव खुद की नजर में गिरने लगते हैं, फिर ऐसे जीव पतन की ओर मार्ग करते हैं और धीरे-धीरे आत्म सम्मान खोने से अपनी स्थिति से गिर जाते हैं। जो कर्मयोगी होता है वह विशाल दृष्टिकोण से अपना कार्य करता रहता है। उसका खुद के प्रति आत्मसम्मान बढ़ता रहता है। इससे होता यह है कि वह योगी मनचाही सफलता प्राप्त कर लेता है। उससे उस योगी के मन का संकल्प और दृढ़ होता जाता है और वह जो भी कार्य हाथ में लेता है उसे बिना संदेह किए पूरा करके ही दम लेता है। उसके ठीक उल्टा भोगी जीव कर्म करने का बहाना करता है। पर भोगी का आत्म सम्मान कम होने के कारण वह मन में संदेह करने लगता है। भोगी में बड़ा कार्य करने का साहस नहीं रहता। इसलिए भोगी मनुष्य खुद के बल पर सफल नहीं हो पाते। इस सृष्टि में जो भी उदय

या पतन होता है, वो होने के समय एक प्रलय होता है और इस प्रलय की दाह से भोगी जीव नष्ट हो जाते हैं। पर जो योगीजन होते हैं वह इस प्रलय की आग में तपकर खुद को सिद्ध कर लेते हैं। यही जीवन है और यही प्रकृति की रीत है। इस लोक में रहने के लीये भोगों में रमण करके नहीं बल्कि प्रकृति के प्रलय की दाह सहनी पड़ती है। जो सहता है, वही प्रकृति के बदलाव का हिस्सेदार बनता है, कीर्ति का हकदार बनता है। सृष्टि के निर्माण का कार्य निरंतर चालू है। इसका मतलब प्रलय का भी कार्य निरंतर चालू है। यह दाह जिस समय जीव को असहनीय लगती है, तभी उसके पतन का समय निकट होता है और जो तपता है वह योगी होता है। योगी सृष्टि का चक्र निरंतर चलाता रहता है।

इस सृष्टि की प्रलय की दाह जो योगी सहन कर लेता है उसको आगे जाकर जो फलस्वरूप मोहक दृष्य का नजारा दिखाई देता है वह सिर्फ योगी जनों के भाग्य में ही लिखे होते हैं। यह चक्र जब योगी समझ जाता है तो कठिन रास्तों पर भी वह बिना रुके चलता ही जाता है। उसे आने वाले प्रलय से भय या चिंता नहीं होती, ना ही प्रलय के बाद आने वाले मोहक समय में वह शांति से चयन लेता है। कर्मयोगी अपना कर्म निरंतर करता रहता है पर भोगी प्रकृति के बदलाव की दाह ना सहन करने के कारण आगे का नजारा उनके नसीब में या हिस्से में नहीं आता। यह सौभाग्य उसके हिस्से नहीं आता। इसका सटीक उदाहरण है कोरोना काल में पूरी दुनिया में बड़ी हलचाल मची, बहुत लोगों ने हार मानकर अपने

कारोबार बंद किये। कुछ लोगों ने इसी समय को मौका समझा और एक मिसाल दुनिया को दी। सोशल मीडिया स्टार ओर बहुत से नये स्टार्टअप ने इसी प्रलय में जन्म लिया।

6. अनुकरण

जो कर्मयोगी होता है वह पूजनीय होता है। जो कोई भी या जिस किसी भी धर्म में हम जिसकी पूजा करते हैं, वह एक महान कर्मयोगी होता है, उसका कर्म या कार्य अनुकरण करने योग्य होता है, जिसे हम पूजनीय मानते हैं। उसने महान दृष्टिकोण से अनेकों लोगों के हित में कर्म किया होता है, तभी उसे सभी पूजनीय मानते हैं। इसके विपरीत आते हैं भोगीजन, जो खुद के हित में संघर्ष करते हैं, जो खुद कार्य ना करके दूसरों का फल छीनने की कोशिश करते हैं, जो सदा भोगों में ही लिप्त रहते हैं। इसके कारण उनका कोई अनुकरण नहीं करता और उनसे सब द्वेष करते हैं, उन्हें सब राक्षस कहते हैं। जैसे - भगवान प्रभु राम ने राजपाठ छोड़कर, सभी राजसी भोग छोड़कर तपस्वी और साधुओं की सेवा करने के लिए 14 वर्ष वनवास का स्वीकार किया, हमेशा सत्य आचरण किया, उन्हें हम भगवान मानते हैं। इसके उलट सब सुख राजभोग होने के बावजूद अपने खुद के स्वार्थ या भोग के लिए संपूर्ण राज्य और अपनी सोने की लंका का विनाश किया, उसे हम राक्षस रावण कहते हैं। यह अंतर एक योगी और भोगी में होता है।

कर्मयोग यानी 'प्रदान करना' या 'अर्पण करना' है और भोग मतलब 'छीनना, लेना या मरोड़ देना' है। पहले बताये अनुसार, सृष्टि में बिना कर्म किए रहना असंभव है। इसका मतलब

यहां रहने वाला हर जीव कार्य कर ही रहा है। जाने-अंजाने में वह कार्य करता ही जा रहा है। तो बिना उद्देश्य कार्य करते रहने के बजाय उचित होगा कि हम एक विशाल दृष्टिकोण और महान लक्ष्य रखकर ही कार्य करें। ऐसा करने से कार्य करने वाला कर्मयोगी बन जाता है और उसे उसकी कामना अनुसार फल प्राप्त होता है।

यह कर्म युग है, तो यहां पर कर्म ही आवश्यक है। जब आप दुनिया में असंतोष या दुखी क्षणों को देखते हैं, तब आपका अंतःकरण करुणा से भर जाता है। यह ठीक है, पर आप कितना भी कष्ट क्यों ना खुद को पहुंचायें, उससे किसी का भी कष्ट नहीं दूर हो सकता। दूसरों का दुख दूर करना हो, तो आप बस एक कदम आगे जाकर उनका दुख दूर करने हेतु कुछ कार्य करें। यही इस कर्मयुग का धर्म है। यह सभी जीव अपेक्षा तो करते हैं पर स्वयं इसका अनुकरण करें और दुनिया आपका अनुकरण करेगी। तब अनुकरण का फैलाव गति से होगा।

इसके उल्टा, जो भोगी है, वह कर्म करने की बजाय, जो मन का झूठा भाव है या झूठा करुणा का भाव दिखाकर कर्म करने से मुँह फेर लेते हैं और यहीं निर्माण होता है भोगी का और योगी का भी। जब संकट या विपत्ति की स्थिति आती है, उस समय जो आगे जाकर मदद करता है, वही बाद में कीर्ति का हकदार होता है। जैसे - अगर कोई इंसान पानी में डूब रहा है, तो जो उसकी तरफ मदद का

हाथ आगे बढ़ाता है वही महान है। मन का भाव या करुणा भरा हृदय भी व्यर्थ है। प्रार्थना करने वाले हाथ व्यर्थ हैं।

योगीजन कुछ पाने हेतु कठिन परिश्रम करते हैं। वह कष्ट सहते हैं। ज्ञान हो या कीर्ति हो, भौतिक फल या आनंद हो, इन सब के लिए योगी श्रम करता है। पर भोगी इसका ठीक उल्टा होता है। वह हासिल करने की इच्छा रखता है पर कष्ट नहीं सहना चाहता। वह कीर्ति चाहता है पर तप नहीं करना चाहता। भोगी बस आराम से फल पाना चाहता है। वह यह इच्छा रखता है कि कष्ट और तपस्या कोई और करे और फल, ज्ञान, कीर्ति मुझे मिले। ऐसा कभी-कभार हो भी सकता है पर ऐसा हर बार नहीं होता। योगी के पास सहने का सामर्थ्य होता है, इसलिए एक बार फल न मिलने पर वह हताश नहीं होता। पर भोगी बिना कष्ट सहे फल चाहता है और न मिलने से भोगी हताश होता है। इसी कारण भोगी का पतन निश्चित होता है। जैसे प्रकाश की कमी से अंधेरा छा जाता है, ज्ञान की कमी से अज्ञान छा जाता है। अच्छे विचारों की कमी से बुरे विचार हावी हो जाते हैं। ठीक उसी तरह, कर्मयोग न अपनाने से मनुष्य जन भोगी बन जाते हैं। भोगी का सरल लक्ष्यण यह है कि वह फल तो चाहता है पर कर्म नहीं करना चाहता। उसकी आलस की भावना जाग जाती है। मगर योगी ऐसा नहीं करता। जब वह किसी परिणाम के बारे में सोचता है, तो उस तक पहुंचने के लिए योगी के अंदर एक उर्जा का संचार हो जाता है और वह कर्म करने में जुट जाता है। फिर उसे दूसरी किसी भी बात का भय नहीं रहता।

वह अपने कर्म में लीन हो जाता है और अपेक्षित परिणाम हासिल करके ही दम लेता है। महान लक्ष्य को पाने हेतु कर्मयोगी अपने आपको कर्म के प्रति समर्पित कर देता है और निरन्तर और निःसंदेह बस कर्म करता रहता है, तभी उसे महान सफलता प्राप्त होती है। एक बार सफलता का आनंद भोगने के बाद योगी निःसंदेह हो जाते हैं। वह जो भी काम करने का संकल्प करता है, निःसंदेह उसे पूरा करने में जुट जाता है।

जिन मनुष्य को कर्म करने में रस होता है, उनका स्वभाव बहने वाले पानी जैसा होता है। वह अपने आसपास के लोगों से न प्रभावीत होते हैं, ना इर्ष्या करते हैं, बस अपने काम में मस्त रहते हैं। पर भोगी का वैसा नहीं रहता। भोगी बिना मंजिल के घूमने वाले तूफान के जैसा रहता है। वह किसी भी चीज में रस नहीं पाता। वह हमेशा अस्वस्थ और इधर से उधर, उधर से इधर चक्कर लगाता रहता है। इसके विपरीत, योगी बस कर्म करता रहता है। तो वह निर्माण कार्य से हमेशा प्रसन्नता और अच्छाई की दिशा में बढ़ता रहता है और भोगी मनुष्य भोगों में लीन वस्तुओं का भक्षण करते रहने के कारण दुखों की ओर गिरता रहता है। कर्म ही वह रास्ता है जिससे मनुष्य मोक्ष पा सकता है कर्म योग में ध्यान मंथण, तप सब एक साथ किया जा सकता है। कर्मयोगी जब कठिन से कठिन कार्य करने की ठान लेता है और जब कार्य आरंभ करता है, तो उसमें मग्न हो जाता है। वह इतना मग्न हो जाता है कि उसे आसपास की चीजों का जरा भी ध्यान नहीं रहता। इसी मग्न अवस्था में ही उसकी

सभी इंद्रीयाँ ध्यान अवस्था में पहुंच जाती हैं। जैसे - एक बार स्वामी विवेकानंद जी चौराहे पर बैठकर किताब पढ़ रहे थे। तब स्वामी जी किताब पढ़ने में इतने व्यस्त थे कि उनके सामने से एक बारात नाचते-गाते हुए निकल गई और थोड़ी देर बाद कुछ लोग आये और उन्होंने स्वामी जी से पूछा कि क्या यहां से कोई बारात गयी, तो स्वामी जी बोले मैंने ध्यान नहीं दिया, इसलिए मुझे पता नहीं कि बारात यहां से गयी या नहीं। इतना अपने काम में ध्यानस्त होता है एक योगी।

कर्मयोगी अपने काम को इतनी ध्यानस्थ अवस्था में करता है। ऐसा बार-बार होने से अपने मन और विचारों पर कर्मयोगी नियंत्रण पा लेता है। पर भोगी का ऐसे नहीं होता। भोगों को भोगते-भोगते उसकी इच्छा और तीव्र हो जाती है। उसका मन अधिक की इच्छा में और गति से भागने लगता है।

7. हित-अहित

हर जीव अपने दैनंदिन जीवन में कुछ न कुछ हलचल करता रहता है। पानी बहता रहता है, हवा चलती रहती है, पत्ते हिलते रहते हैं। हवा के साथ-साथ खुशबू भी उड़कर यहां से वहां जाती है, धूल भी उड़ती रहती है। यह सब चक्र चलता रहता है। इसमें जो भी हलचल होती है, कुछ अपने हित में रहती है और कुछ अपने हित में नहीं रहती। कर्मयोग मनुष्य के हित में है। कर्म करते हुये मनुष्य जो कष्ट सहता है उससे उसकी सहनशक्ति बढ़ जाती है। जो जितना कठोर परिश्रम करता है वह उतनी ही अच्छी प्रकृति प्राप्त करता है। जो कर्मयोगी होता है वह स्वयं ही कष्ट को स्वीकार करता है। उसे यह प्रकृति कष्ट नहीं पहुंचा सकती। पर जो भोगी मनुष्य होता है, वह भोगों में ही अपना जीवन व्यतीत करता है। तो भोगों में लीन मनुष्य अनजाने से भोगों को ना भोगते हुए दुखों को ही भोगता है। यह अनगिनत बाधा और विकार अपने ओर आकर्षित करता है। हर चीज में भोग और सुख खोजने वाला भोगी अंत में दुख ही पाता है। हर चीज में सुख भोगने वाले भोगी मनुष्य को ये प्रकृति जब दुख पहुंचाती है, तो वह बहुत ही असहनीय होता है। इसका मतलब भोग हमारे हित में नहीं है।

कर्म जो होता है, वह जीव के मन के खिलाफ होता है और भोग मन को बड़े ही पसंद आते हैं। पर भोगों को भोगने वाले मनुष्य

हमेशा उलझन में रहते हैं। मन भोगों की और बड़ा आकर्षित होता है। शुरु-शुरु में बड़ा आनंद देने वाली चीज बाद में उतना आनंद नहीं देती। बाद में वही चीज दुख देने लगती है। पर कर्मयोग में ऐसा नहीं होता। शुरु-शुरु में मुश्किल और दुखदायक लगने वाली चीजें बाद में बड़ी आसान और आनंददायक लगती हैं। जैसे - जीवन में अनैतिक काम शुरुआत में बड़ा आनंद देते हैं और फल भी देते हैं, पर बाद में यही जीना मुश्किल कर देते हैं। ठीक उसके उल्टा कल्याणकारी काम शुरु करना बहुत ही कठिन होता है। पर धीरे-धीरे वह आसान लगने लगता है और बाद में वही काम योगी को महान बना देता है।

8. भोगों में योग

हर जीव के लिए कर्म करना अनिवार्य है, पर जीवों को कर्म से ज्यादा भोग प्रिय है, तो क्या ऐसी कोई चीज या मार्ग हो सकता है जो भोगों का आनंद और योग का फल प्रदान कर सकता हो? और ऐसा कोई कर्म हो सकता है, जो भोगों का आनंद प्रदान कर सकता हो? हाँ, ऐसा हो सकता है और वह है पसंदीदा नृत्य या पसंदीदा मैदानी खेल। ये दोनों ऐसे रास्ते हैं, जो जीवों को भोगों का परमोच्च्य आनंद और कर्म का उच्चतम फल प्रदान कर सकते हैं। भोगी जन खेल का आनंद भोगते-भोगते कर्म का रास्ता चलते हैं। ऐसा बार-बार होने से आलस्य दूर हो जाता है और आलस्य दूर होने के कारण मनुष्य धीरे-धीरे कर्म के मार्ग पर चलने लगता है। खेल इस युग का जादुई मार्ग है, जिसके द्वारा पतन की ओर जाने वाला हर जीव आनंद भोगते-भोगते कष्ट उठाने शुरु हो जाता है और एक बार जब उसे कष्ट उठाने की आदत हो जाती है तो कर्म का रास्ता उसे ज्यादा कष्टमय नहीं लगता। जैसे - बीमार इंसान को या आलसी इंसान को हम कठिन परिश्रम करने बोलें, तो वह कभी राजी नहीं होगा। पर उसे ही हम पसंदीदा खेल या नृत्य करने बोलें, तो वह तैयार हो सकता है। जब आलसी या रोगी मनुष्य खेलना या नृत्य करने का काम बार-बार करेगा, तो बाद में वह कठिन परिश्रम

वाले काम को भी देखकर ज्यादा आचंभित नहीं होगा। वह धीरे-धीरे परिश्रम भी करेगा क्योंकि वह उसके हित में है।

खेल में और नृत्य में योगी व भोगी दोनों भी मग्न हो जाते हैं और ध्यान की अवस्था में पहुंच जाते हैं। ये एकलौता ऐसा काम है, जो दोनों को आकर्षित करता है। इस रास्ते पर दोनों ही निःसंदेह चलने लगते हैं और ऐसा बार-बार होने से कर्म के प्रति दोनों का भी आकर्षण बढ़ता है। उनका संदेह दूर होता जाता है और संकल्प-शक्ति दृढ़ होती जाती है। इस कर्मयुग में निरंतर कर्म ही सफलता का एक मात्र रास्ता है, मूल मंत्र है। यह सृष्टि कुछ देने से पहले अपना कर्म मांगती है, अपना सब्र मांगती है, अपनी संवेदनशीलता मांगती है। इन सबसे कीमती, सृष्टि जो हमसे मांगती है वह है समय। समय इस दुनिया की सबसे कीमती और महत्त्वपूर्ण चीज है। सृष्टि का एक नियम है कि यहां पर जो भी होता है वह एक निर्धारित समय बाद ही होता है। उसमें कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। जैसे – पेड़ में फल होने हों या फल-फूल देने हों, कोई भी चीज हो, उसमें परिपक्वता आने में निर्धारित समय लगता ही है।

भोगों में लीन होने के लिए जीवों को जरा भी समय नहीं लगता। पर ध्यान में मग्न होने के लिए कर्म में रुचि निर्माण होने के लिए आवश्यक वक्त लगता ही है। इसका मतलब अधिक चीजें घटित होने में वक्त लगता ही है। योगी जब कर्म करते-करते मग्न अवस्था में पहुंच जाते हैं, तब उन्हें वक्त का पता नहीं चलता। ऐसे

वक्त में कर्मयोगी ध्यानमग्न अवस्था में पहुंच जाता है। अपने कर्म उदीष्ट और परिणाम इन सबके परिणाम योगी पहले ही दिखाई देते हैं, पर भोगी का इसके विरुद्ध होता है। भोगी जब भोगों में रमण करता है उसे भी वक्त का जरा भी पता नहीं चलता। वह भोगों में बंध जाता है पर भोगी को होने वाले परिणाम दिखाई नहीं देते। उसकी बुद्धि पर अंधकार छा जाता है और ऐसा भोगी मनुष्य कर्म करने के बारे में सोच भी ले, तो वह कर नहीं पाता। तब उसके लीए वक्त रुक-सा जाता है।

भोगी और योगी दोनों के लक्षण भी हम पहचान सकते हैं। भोगों में लीन मनुष्य की त्वचा कोमल और मुलायम रहती है, वह खुद का संघर्ष से बचाव करता रहता है, वह खुद पर किसी भी कष्ट को नहीं सहता। पर इसके ठीक उलट, एक कर्मयोगी की त्वचा क्षीण और रूखी होती है क्योंकि कर्मयोगी सभी कष्ट सहता है और कर्म और बस कर्म ही करता रहता है। ऐसी तो कई बातें हैं पर जिन्होंने कर्मयोग अपनाया है उनका नाम अमर हो गया है। हम जिन्हें प्रभु मानते हैं, वह दशरथ पुत्र राम, जो कर्मयोग अपनाकर दुखियो ं का दुख दूर करते रहे, वह चाहते तो सभी भोगों को भोग सकते थे। वह एक राजकुमार के रूप में जन्मे थे। अगर वह भोगी बनकर राजपाठ भोगते, तो आज उन्हें कोई भी याद नहीं करता। उन्होंने सभी भोगों का त्याग करके कर्मयोग अपनाया था और जंगल में जाकर ऋषि मुनि और तपस्वियों का रक्षण करते थे। दुष्ट राक्षसों का संहार किया और खुद नंगे पाव कांटो भरे रास्ते पर

चलकर अपना प्रण पूरा किया। खुद इतना कष्ट सहकर उन्होंने औरों का भला चाहा, अनेकों लोगों के हित में कार्य करके वह एक सामान्य पुरुष से मर्यादा पुरुषोत्तम बन गये। यह उनके कठिन परिश्रम और त्याग के कारण से उनके कुल का उद्धार हो सका। उस वक्त जिन ऋषि मुनियों ने घोर तपस्या की थी, हम पहले उन्हें याद नहीं करते। हम पहले प्रभु श्रीराम को याद करते हैं। यह होती है कर्मयोग कि महिमा।और रावण, जो महान तपस्वी था, उसने कठिन तपस्या करके बहुत सी विद्यायें अर्जित की थीं और अंत में वह जब भोग के मार्ग पर चलने लगा तब सारी दुनिया जानती है कि जीवन भर की उसकी तपस्या क्षण भर के भोग के लिए भंग हो गयी और उसका पतन हो गया, उसके कुल समेत सर्वनाश हो गया। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जिन्होंने कर्मयोग अपनाकर अपने कुल का उद्धार किया और कुछ भोगी जिन्होंने भोग का रास्ता अपनाकर अपने साथ-साथ अपने कुल का भी सर्वनाश किया। यहाँ पर एक बात साफ है कि कुदरत आपको जो चाहो देती है पर बदले में आपसे कुछ ना कुछ लेती है, तो जीवन में हमेशा सर्वोत्तम की चाह रखनी चाहिए। हमेशा आप जो चाहते हैं, वह अद्वैत होना चाहिए। आप जो भी कार्य कर रहे हैं वह भी सर्वोत्तम होना चाहिए। इसके बाद में जो परिणाम होंगे, वह दी बेस्ट होंगे। यह प्रकृति आपके कर्मो का ही रिफ्लेक्शन है, इसलिए सर्वोत्कृष्ट ही कार्य करें।

प्रकृति आपको जो चाहे वह प्रदान करती है, इसलिए सर्वोत्कृष्ट की चाहत में प्रयास करें। अगर कर्म-निर्माण का कार्य है,

तो यह कार्य करके अपने आपको सभी जीवों में ऊपर उठायें। जो जीव निर्माण के कार्य में चलते हैं, वह श्रेष्ठ कहलाते हैं। भोगों में रमण करके अपनी स्थिति से गिरकर पतन की ओर ना जायें। कर्म, निर्माण है यानी कर्म से उजाला छा जाता है। पर अंधकार के लिए कुछ अलग करने की जरूरत नहीं है, कर्म ना करने से अपने आप ही अंधकार छा जाता है। इस सृष्टि में कर्म पूजनीय है और भोग त्यागनीय है। भोग हमें थोड़ी देर ही शांति देते हैं पर जीवन भर उसकी आदत हमें जलाती रहती है। कर्मयोग में हमें कर्म करते टाइम ही कष्ट सहना पड़ता है या हमें तपना पड़ता है पर जीवन भर उसका परिणाम हमें आनंद पहुंचाता रहता है या ठंडक का एहसास कराता रहता है। जैसे - प्रभु राम ने चौदह साल तक वनवास सहन किया पर उनकी कीर्ति चंद्र-सूर्य के समान है, जो अब तक कीर्तिमान है और आगे भी रहेगी। पर रावण ने क्षण भर के भोग के लिए युगों युगों तक अपने कुल को कलंकित किया।

9. अनुवाद

युग अनुसार निर्धारित कर्म करने का विचार आत्मसात करता हुआ जो जीव पढ़ते-पढ़ते यहां तक पहुंचा है, वो एक उत्कंठा वाला या जिज्ञासु स्वभाव का जीव है। ऐसा जीव किसी भी चीज को देखने के बाद उसकी गहराई तक जाने का निश्चय करता है। वह अपेक्षित ज्ञान हासिल किये बिना रुकता नहीं। ऐसे स्वभाव वाले जीव अत्यंत ज्ञान अर्जित करते जाते हैं। ऐसा बार-बार होने से वह अत्यंत बुद्धिमान बन जाते हैं। ऐसे बुद्धिमान जीवों का एक समूह बनकर महान कर्मयोग अपनायेंगे और वो इस सृष्टि में शांति प्रस्थापित करेंगे। एक ही विचार है कि कर्म फल या वक्त को देखकर कार्य करें। एक अच्छी पुस्तक लिखने का विचार मन में रखकर, मतलब एक ऐसी पुस्तक जिसका विश्व में गौरव हो, जो समाज में शांति प्रस्थापित करे, अनेकों लोगों का संदेह दूर करे, तो प्रकृति ने मुझे यह देखने के लिए सूचित किया। इसमें दिये गये प्रत्येक उदाहरण आपने सुना हुआ होगा परन्तु जो रास्ता परिचित है, आप दुबारा उस पर जाने से पहले परिणाम से भी परिचित हों। इसलिए हर उदाहरण जाना-पहचाना है। भगवद गीता में कहे अनुसार कर्म न करने से काम बढ़ता है, काम बढ़ने से क्रोध और क्रोध बढ़ने से हिंसा होती है। इसी कारण आजकल समाज में हिंसा बढ़ गयी है।

एक ही विचार है कि कर्मफल या परिणाम देखकर कार्य करें। एक अच्छी किताब या विचार प्रदर्शित करने का विचार मन में आया। अच्छा का मतलब जिसका विश्व में गौरव हो, जो समाज में शांति प्रस्थापित करे, अनेकों विचारों से भ्रमित जीवों को मार्ग मिले। इस हेतु से एक अच्छी पुस्तक लिखने हेतु मैंने बहुत समय पहले कार्य शुरु किया था। तो कार्य चालू रखने पर यह परिणाम मिला है, जो आपके सामने है। आप जितना परिणाम स्पष्ट रूप से चाहेंगे उसी दिशा में आपका कार्य होता रहेगा और सटीक परिणाम आप प्राप्त कर पायेंगे।

निरंतर कार्य करते रहना और निरंतर कार्य से बदलाव आने पर उसके साथ युग अनुसार बदलाव लाते रहना, यही युग अनुसार कार्य करना है। जैसे - समाज में जाति व्यवस्था, जो शांति कायम करने हेतु बनायी गयी थी, वही अब अशांति का कारण बन गयी है। कैसा होगा अगर आपको इससे आजाद कर दिया जाये और बदले में आप ही को प्रेम और शांति मिले।

परिणाम को देखकर कार्य करना - यह एक विचार है जिस पर कई पुस्तकें लिखी गई हैं; जैसे - द पॉवर ऑफ सबकॉन्शिअस माइंड, थिंक एंड ग्रो रिच, सोचें और अमीर बनें। यह एक विचार है कि आप परिणाम को पहले स्पष्ट रूप से सोचें और वैसा बनें। उस हेतु कार्य करें। ऐसा करने से आप एकीनन अमीर बनेंगे। यानी फल को देखकर युग अनुसार कार्य करना। जैसे - माईकल फिलीपींस

नाम का एक तैराक 2008 में बेइजींग ओलम्पिक में जीतने हेतु 2004 से लगातार एक भी छुट्टी ना लेते हुए 365×4 = 1460 दिन रोज के 8 घंटे पानी में प्रैक्टिस करता रहा और परिणाम कि एक ही मैच में उसने आठ गोल्ड मेडल जीते। इस प्रकार श्रेष्ठ फल पाने हेतु किया गया निरन्तर अभ्यास विफल नहीं होता। ऐसा नहीं है कि ध्यान-योग श्रेष्ठ नहीं है। ध्यान-योग अति श्रेष्ठ है। ध्यान-योग से मिला हुआ ज्ञान दिव्य-ज्ञान होता है। जो ध्यान-योग से सिद्ध हुआ पुरुष है, वह दूसरों के मन की बात सुन लेता है, भविष्य में होने वाली चीजों का पहले ही अनुमान लगा लेता है। पर कर्म मार्ग ध्यान और योग मार्ग से आसान है, सरल है। ध्यान-योग से ब्रह्मांड का सारा ज्ञान योगी को हासिल हो जाता है। पर इस युग में आधुनिक खोजों के कारण से सब ज्ञान एक जगह पर स्टोरेज है। गूगल और इंटरनेट जैसी खोजों के कारण यह सब ज्ञान/जानकारी एक सेकेंड में प्राप्त हो जाता है। यह किसी दिव्य-ज्ञान से कम नहीं है।

ध्यान-योग का जो रास्ता है, वह बहुत ही कठिन होता है। अगर कर्मयोग चलकर पहुचने जैसा है, तो ध्यान-योग रेंगकर जाने के समान है। आज तक जितने भी आविष्कार हुए हैं, उनका जिक्र ध्यान योगियों ने पहले ही करके रखा है। जैसे - रेडियो तरंग, रेडिएशन। इन सबका इस्तेमाल ध्यान-योगी सृष्टि में विलीन ज्ञान को प्राप्त करने के लिए किया करते थे।

कर्मयोग से सफल बना जीव और ध्यान-योग से सफल बना जीव, दोनों समान ही है। दोनों को ही दूसरों का भला करने की भी शक्ति हासिल करनी पड़ती है। कर्मयोग से धनवान बना जीव अगर किसी पर कृपा करके दान न करे और ध्यान से तपस्या करके सिद्ध बना जीव अगर किसी पर अपनी कृपा न करे, तो दोनों की उपलब्धि व्यर्थ है। योगी और अधिक स्पष्ट परिणाम की कल्पना करके निरंतर कार्य करता रहा, तो उसे अपेक्षा से अधिक जब फल की प्राप्ति हो, तो वह कर्म करना छोड़ देता है। इसलिए प्राप्त फल का दान भी करना उतना ही आवश्यक है, जितना कर्म करना। कर्म करना यानी पीड़ा सहना भी हो सकता है, मगर जो पीड़ा सहता है वही महान बनता है, यही हमने इस पुस्तक में लिखा है। उदाहरण - महान बनने के लिए या महान कठिन कर्म करने के लिए कड़ी तपस्या करनी पड़ती है, पीड़ा सहनी पड़ती है। कष्ट इंसान को सचेत की अवस्था में लाता है तभी तो तपस्वी एक पैर पर खड़ा होकर तपस्या करते थे और परम ज्ञानी या सिद्ध बनते थे। भोगी ठीक इसका उल्टा करते हैं। भोगी बस आराम और भोगों में रमण करने को ही जीवन मानता है। जरूरी नहीं कि आज का योगी भी एक पैर पर खड़ा होकर उतनी ही पीड़ा सहे और सहने पर भी वह महान बने। इसलिए जरूरी है युग नीहाय कर्म करना। पीड़ा सहनी है पर युग अनुसार फल की अपेक्षा रख कर्म करना है, कठिन परिश्रम करना है, कठिन से कठिन प्रयास करना है। पर ये पहले सोचना है कि वक्त हमसे क्या चाहता है। हो सकता है कोई बिना कठिन

परिश्रम किये ही बड़ी मात्रा में फल प्राप्त कर रहा हो, तो उसका कारण है उसकी स्थिति। पर अगर वह उस स्थिति में कठिन परिश्रम करे, तो वह असामान्य फल की प्राप्ति कर सकता है। समय, वर्तमान एक रहस्य के समान है, आपको ये भूतकाल की याद दिला देगा। जरूरत पड़ने पर वक्त आपको भविष्य की भी कल्पना देगा, आप बस वर्तमान को खुली चेतना से समझें। वक्त ही है, जो सब निर्माण करता है और सबका पतन भी करता है। इसलिए युग निहाय यानी वही करें, जो वक्त कहता है।